vf/kxe
अंक 17 : दिसम्बर 2020

Hkkjrh; f'k{kk uhfr&2020 vkSj Hkkjrh; Kku ijaijk

MkW0 lhek 'kqDyk vks>k*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पूरी शिक्षा व्यवस्था में सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव करती है ताकि इसका इक्कीसवीं सदी की शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ मेल तो बिठाया ही जा सके, साथ ही इसे प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत की नींव पर समृद्ध भी बनाया जा सके। शिक्षा नीति कहती है कि दुनिया के विभिन्न विकसित देशों के अनुभवों से यह स्पष्ट हो चुका है कि अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं में सुशिक्षित होने से हानि नहीं बल्कि शैक्षिक, सामाजिक और तकनीकी उन्नति के लिए लाभ ही मिला है। इसी संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भारत के सभी छात्र–छात्राओं द्वारा अच्छे, सफल, मौलिक सोच वाले, परिस्थिति अनुकूल और रचनाशील व्यक्ति बनने के लिए जिन मुख्य विषयों, कौशलों व क्षमताओं को आवश्यक माना है उसमें 'भारत का ज्ञान' एक मुख्य विषय है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, 'भारत के ज्ञान' को परिभाषित करते हुए कहती है कि ''भारत के ज्ञान' में प्राचीन भारत से प्राप्त ज्ञान और आधुनिक भारत और इसकी सफलताओं और चुनौतियों में इसके योगदान के साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के संबंध में भारत की भविष्य की आकांक्षाओं का एक स्पष्ट भाव शामिल होगा।' (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020,* पृ. 24)

तो आइए, पहले हम यह समझें कि हमारे छात्र–छात्राओं को 'भारत का ज्ञान' होना क्यों आवश्यक है? यह महत्त्वपूर्ण है कि भारत में हमारे छात्र–छात्राएँ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को समझें और उसकी सराहना करें, साथ ही विज्ञान, कला, वास्तुकला, विरासत, दर्शन आदि विभिन्न क्षेत्रों में विश्व सभ्यता को भारतीय सभ्यता के योगदान और विश्व की कुछ प्राचीन सभ्यताओं और उनके योगदानों से भी परिचित हों। आज के समय में यह और भी अधिक आवश्यक हो गया है, क्योंकि हमारे कई छात्र–छात्राएँ अतीत में विभिन्न क्षेत्रों में हुई देश की प्रगति और उपलब्धियों के बारे में नहीं जानते हैं और ऐसी स्थिति में वे भविष्य के लिए इस

---

* *प्रोफेसर,* इतिहास, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

स्वदेशी ज्ञान के उपयोग की संभावना और प्रासंगिकता से अंजान रह जाते हैं।

भारत की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं को स्कूली पाठ्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनाने के यूँ तो कई लाभ हैं। सबसे पहले, इस तरह का ज्ञान हमारे छात्र–छात्राओं को हमारी समृद्ध ज्ञान प्रणालियों और हमारे देश की परंपराओं से अवगत कराने में मदद करेगा। हमारे सांस्कृतिक इतिहास, कला, भाषा और परंपराओं का ज्ञान छात्र–छात्राओं में सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्म–सम्मान का निर्माण करने में मदद करेगा। एक रचनात्मक सभ्यता के रूप में यह भारत की एक अधिक निष्पक्ष और सुविज्ञ सराहना को बढ़ावा देगा और व्यक्तियों की संज्ञानात्मक और रचनात्मक क्षमताओं को बढ़ाएगा और अंततः व्यक्तिगत आनंद बढ़ाएगा। इससे बहुविषयी सोच प्रदान करने में भी मदद मिलेगी। वास्तव में भारतीय दृष्टिकोण हमेशा से ही बहुविषयी रहा है। भारतीय गणितज्ञों द्वारा गणित के इस्तेमाल में काव्यात्मक या भाषाई उपकरणों का उपयोग इसका एक अच्छा उदाहरण है। अपने देश के समृद्ध ज्ञान और संस्कृति के बारे में जागरूकता राष्ट्रीय एकता को भी बढ़ावा देती है। देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि देश के विभिन्न समूहों और क्षेत्रों की सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं, इतिहास और उनके योगदानों पर फिर से जोर दिया जाए, समझा और सराहा जाए। यह देश के बहुलतावादी समाज और समृद्ध संस्कृति की प्रकृति को वास्तव में समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। भारत का ज्ञान न केवल सौंदर्यशास्त्र की समझ विकसित करने में मदद करेगा, बल्कि हमारी विरासत और उसके बारे में छात्र–छात्राओं को अधिक जानने, संजोने और उसे संरक्षित करने के लिए भी प्रेरित करेगा। यह विविधता, सहिष्णुता, आपसी समझ, धैर्य और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के सांस्कृतिक मूल्यों को प्रदान करने में भी मदद करेगा। शासन, कृषि, जल–प्रबंधन, कला, आध्यात्मिकता, पर्यावरण संरक्षण आदि ऐसे कई क्षेत्र हैं जिन क्षेत्रों में प्राचीन ज्ञान अभी भी हमारी वर्तमान समस्याओं के स्थायी समाधान में मदद कर सकता है।

अब प्रश्न उठता है कि हमारे छात्र–छात्राओं को हमारी संस्कृति और परंपराओं से अवगत कराने के लिए क्या किया जाना चाहिए? दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक, भारत, हजारों वर्षों से एक विकसित

सभ्यता और संस्कृति का देश रहा है जिसने गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और शल्य चिकित्सा, सिविल इंजीनियरिंग, वास्तुकला, जहाज निर्माण, योग, ललित कला, शतरंज आदि क्षेत्रों में विश्व ज्ञान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने प्राचीन भारत के कुछ विश्व–स्तरीय संस्थानों जैसे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा है कि ये विश्वविद्यालय बहु–विषयी शिक्षण और अनुसंधान के लिए प्रसिद्ध थे और यहाँ सभी पृष्ठभूमियों और देशों के विद्वान और छात्र आते थे। इसके साथ ही शिक्षा नीति ने विभिन्न भारतीय विद्वानों जैसे चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि दत्त, माधव, पाणिनि, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगला, शंकरदेव, मैत्रेयी आदि के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए उत्कृष्ट योगदानों की बात करते हुए भारतीय संस्कृति और दर्शन द्वारा दुनिया को प्रभावित करने की बात कही है। इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति, विश्व धरोहरों की इन समृद्ध भारतीय विरासतों को न केवल पोषित और संरक्षित करने की बात करती है, बल्कि इस ज्ञान को हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शोध, संवर्धन और नए उपयोगों के लिए भी प्रयोग में लाये जाने की पुरजोर वकालत करती है।

ऐसा किस तरह किया जा सकता है, इस संबंध में भी शिक्षा नीति दिशा निर्देश देती है। शिक्षा नीति एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है जो सभी छात्र–छात्राओं में भारतीय होने का गर्व, न केवल विचार के स्तर पर, बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में, साथ ही साथ ऐसे ज्ञान, कौशल, मूल्यों व सोच को विकसित करने में भी ला सके जो मानवाधिकारों, स्थायी विकास, जीवन यापन और वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो, जिससे वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सकें।

निश्चय ही विद्यालयी पाठ्यक्रम में इस ज्ञान क्षेत्र को शामिल करके शिक्षा नीति के इस स्वप्न को साकार किया जा सकता है। ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है इस भारतीय ज्ञान परंपरा को मौजूदा पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत करना– बजाए इस पर नया पाठ्यक्रम बनाकर इसे अलग इकाई के रूप में देकर। सामाजिक विज्ञानों में स्थापित लक्ष्य और विषय (इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र आदि) हमारी संस्कृति और परंपराओं के बारे में शिक्षण और सीखने के लिए कई अवसर प्रदान करते हैं। भारत के ज्ञान की यह सामग्री पाठ्यक्रम के अन्य विषयों,

जैसे भाषा, साहित्य और ललित कला के साथ भी सामाजिक विज्ञान का संबंध स्थापित करने का अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से सभी चरणों में सभी विषयों के साथ जुड़ा हुआ यह भारत का ज्ञान, हमारी विरासत और संस्कृति के लिए एकीकृत शिक्षण दृष्टिकोण की सुविधा प्रदान करेगा। जहाँ भी प्रासंगिक हो, ऐसे ज्ञान को सही और वैज्ञानिक तरीके से शामिल करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं और देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों द्वारा इसमें जो योगदान दिया गया है,उसे भी इस ज्ञान परंपरा में शामिल करना चाहिए।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात कि भारतीय ज्ञान परंपरा को विषय के मुख्य आख्यान/विवरण के साथ जोड़कर बताया जाना चाहिए न कि इसे बॉक्स सूचना तक सीमित कर देने के। कई बार इस तरह के बॉक्स में दी गई सूचनाओं पर शिक्षकों और छात्रों का ध्यान नहीं जाता है। किसी भी विषय पर चर्चा से पहले यदि हम उस क्षेत्र में कोई भारतीय उपलब्धि है तो उससे उसे जोड़कर प्रस्तुत करेंगे तो बेहतर होगा। इसे आधुनिक समय में लोकतंत्र पर चर्चा के एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। इससे पहले कि हम आधुनिक समय में लोकतंत्र पर चर्चा करें, प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक परंपराओं पर प्रकाश डालने और चर्चा करने के साथ इसकी शुरुआत करना उपयोगी होगा। ये परंपराएँ वर्तमान लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं से भिन्न हो सकती हैं, लेकिन इस पर चर्चा से छात्र–छात्राओं को विषय के साथ आसानी से संबंध बनाने में मदद मिलेगी और यह समझने में भी मदद मिलेगी कि प्राचीन भारत में किस तरह की लोकतान्त्रिक परंपराओं का परिपालन होता था और प्रतिनिधित्व और भागीदारी कैसे भिन्न–भिन्न तरीकों से अभिव्यक्त हो सकती है।

इसके साथ ही भारतीय ज्ञान और इसके विभिन्न पहलुओं के बारे में छात्र–छात्राओं के बीच रुचि पैदा करने और इसे सतत बनाए रखने के लिए क्षेत्र भ्रमण, लघु परियोजना, वीडियो निर्माण, वाद–विवाद जैसे अनेक तरीके अपनाये जाने चाहिए। इन गतिविधियों का अंतिम लक्ष्य छात्र–छात्राओं को हमारी विरासत को संरक्षित करने के लिए प्रेरित करना है। नीति यह मानती है कि भारत की समृद्ध संस्कृति का ज्ञान शिक्षार्थियों को स्वयं अनुभव करने देना चाहिए। इसके लिए छात्र–छात्राओं को विभिन्न

क्षेत्रों के इतिहास, विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान, परंपराओं, स्वदेशी साहित्य और ज्ञान का अध्ययन करने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में जाने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इस तरह का भ्रमण न केवल इन क्षेत्रों के बारे में उनके ज्ञान को बढ़ाएगा बल्कि विविधता, संस्कृति, परम्पराओं और भारत के विभिन्न हिस्सों के ज्ञान जैसी सभी विशिष्टताओं की सराहना करने में भी मदद करेगा। ऐसे भ्रमण के लिए पर्याप्त धनराशि आवंटित की जानी चाहिए। इस तरह की यात्राओं को अनिवार्य किया जाना चाहिए और इन यात्राओं से संबंधित अभ्यासों को छात्र– छात्राओं के मूल्यांकन का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

संस्कृति के स्वयं अनुभव को बढ़ावा देने के लिए, विद्यालयों में भिन्न–भिन्न शिल्पकारों को भी आमंत्रित किया जा सकता है जहाँ छात्र–छात्राओं को ऐसे पारंपरिक शिल्प को छूने और देखने का अवसर दिया जा सकता है। इससे उन्हें पता चलेगा कि कैसे तरह–तरह की शिल्पकृतियाँ, जिन्हें उन्होंने संग्रहालयों या शिल्प मेलों में देखा है, आज भी बनाई जा रही हैं। यह न केवल उन्हें भारत की असाधारण और समृद्ध शिल्प परंपराओं और कुशल और प्रतिभाशाली शिल्पकारों से अवगत कराएगा, बल्कि उन्हें श्रम की गरिमा जानने और हमारी पहचान, विरासत और स्थानीय शिल्पों के बीच संबंधों को समझने में भी मदद करेगा।

छात्र–छात्राओं को प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों पर परियोजना बनाने का भी सुझाव दिया जा सकता है जैसे धौलावीरा जैसे एक शुष्क क्षेत्र में प्राचीन समय में व्यापक जल प्रबंधन प्रणाली। इस परियोजना कार्य से न केवल छात्र–छात्राओं को हमारे पूर्वजों की तकनीकी प्रगति को समझने में मदद मिलेगी बल्कि उन्हें यह समझने में भी मदद मिलेगी कि उस समय लोगों ने कैसे स्थानीय समस्याओं को स्थानीय समाधानों के साथ हल करने का प्रयास किया। इसी तरह, उन्हें प्रकृति की भारतीय अवधारणा पर शोध करने का सुझाव दिया जा सकता है। आज हर कोई वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण के मूल्य के बारे में बात कर रहा है लेकिन बहुत कम लोग प्राचीन काल से इस क्षेत्र में भारत के योगदान के बारे में जानते हैं। प्रकृति से संबंधित इस तरह के सरोकारों के कई उदाहरण प्राचीन भारतीय साहित्यिक खजाने में यत्र–तत्र मिल जाया करते हैं। इसी तरह कला और वास्तुकला में प्रकृति के महत्त्व को दर्शाते चित्रण बहुतायत में उपलब्ध हैं। जैसे, हड़प्पा की विभिन्न कलाकृतियों पर मिलने

वाले विभिन्न पेड़ों (विशेषकर पीपल) के चित्र हमें उस समय से पेड़ों के महत्त्व और उन्हें पवित्र माने जाने की ओर संकेत करते हैं। योग की परंपरा एक और महत्त्वपूर्ण उदाहरण है, जिसका अध्ययन और शोध छात्र–छात्राओं द्वारा किया जा सकता है। भारत ने इस क्षेत्र में दुनिया को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। योग केवल एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, यह आत्म–अन्वेषण की एक प्रणाली है, जो हड़प्पा काल से ही किसी न किसी रूप में उपमहाद्वीप में प्रचलित रही है। हड़प्पा सभ्यता से संबंधित कई मुहरों पर दैवीय आकृतियों को विशिष्ट आसन में दिखाया गया है। साथ ही विभिन्न मूर्तियों को योग की कई मुद्राओं में देखा जा सकता है। हमें राजस्थान के बालाथल (1000 ईसा पूर्व) से पद्मासन में दफनाए गए लोगों का प्रमाण मिलता है। इस आसन में कुछ साधुओं को आज भी दफनाने की परंपरा देखी जा सकती है। इन सबसे यह पता चलता है कि यह प्राचीन परंपरा अभी भी जारी है।

भारतीय ज्ञान से संबंधित विभिन्न विषयों पर स्कूलों में प्रतियोगिताओं/प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया जा सकता है। इसी तरह, विज्ञान और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में प्राचीन और आधुनिक भारत की उपलब्धियों और प्रेरणादायक व्यक्तित्व पर पाठ्यक्रम में उचित समय पर वीडियो वृत्तचित्र बनाए और दिखाए जा सकते हैं।

भारतीय ज्ञान से संबंधित विभिन्न विषयों के बारे में पढ़ाने के लिए आज शायद ही योग्य शिक्षक मिलेंगे। इसके लिए उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता है। यदि हमारी शिक्षा व्यवस्था में आरम्भ से ही भारतीय ज्ञान परम्परा को महत्त्व दिया जाता तो आज इस बात की नौबत ही नहीं आती। आज जरूरत इस बात की है कि शिक्षक–शिक्षा में अन्य विषयों के साथ विद्यार्थी शिक्षकों को भारत और उसके मूल्यों/लोकाचार/कला/परंपराओं के ज्ञान से भी परिचित कराया जाये। इसके साथ ही सेवारत शिक्षकों को ज्ञान के इस क्षेत्र से परिचित कराने और विशेषज्ञता दिलाने के लिए व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध विरासत को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। छात्र–छात्राओं को अपने देश की उपलब्धियों, विविध क्षेत्रों में विश्व सभ्यता में इसके योगदान और इस पर शोध करने के लिए प्रोत्साहित करने की

तत्काल आवश्यकता है। इस संबंध में पाठ्यक्रम बनाने वालों, स्कूल के अधिकारियों, माता–पिता, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, संग्रहालयों, विरासत के क्षेत्र में काम कर रहे लोगों और अन्य हितधारकों के बीच साझेदारी की भी महती आवश्यकता है। केवल निष्पक्ष और वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर ही हम इस भारतीय विरासत के उचित परिप्रेक्ष्य को समझ सकते हैं और तभी हम इस सभ्यता से जुड़े होने के गौरव का सही अनुभव कर सकते हैं।

I UnHk

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 : मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।